भारतीय किसान आंदोलन की क्रन्तिकारी विरासत

शहीद यादगार टेंट

पिलर 777, टिकरी बॉर्डर, नई दिल्ली

■ कलेक्टिव ■

हम इतिहास बनता देख रहे हैं।

नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार तीन कृषि कानून लागू करने पर तुली हुई है, जबकि किसानों ने इन कानूनों को निरस्त करने के लिए राष्ट्रीय राजधानी को टिकरी, सिंघू, गाजीपुर और शाहजहांपुर सीमाओं पर अलग-अलग दिशाओं से घेर लिया है। ये कानून उन नमूनों का एक हिस्सा हैं जो इंटरनेशनल मोनेटरी फण्ड (IMF) और वर्ल्ड ट्रेड आर्गेनाइजेशन (WTO), दो अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों द्वारा प्रभावित हैं, जिनके माध्यम से अमरीकी साम्राज्यवादी विश्व व्यवस्था को जांच में रखा गया है। वे इस बात की वकालत करते हैं कि भारत जैसे विकासशील देशों को अपने स्वयं के खाद्य सुरक्षा के लिए कृषि को सब्सिडी देना बंद कर देना चाहिए और हम क्या, कहाँ और कैसे खेती करते हैं, इस पर पूंजीपतियों को नियंत्रण करना चाहिए। इस साम्राज्यवादी/ पूंजीवादी डिजाइन को,जो कि जनविरोधी भाजपा /आरएसएस ने बनाया है, प्रदर्शनकारी किसानों ने भली- भांति पहचाना है, की ये लोग साफ - साफ साम्राज्यवादियों और उनके देसी सहयोगियों अम्बानी-अडानी के हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

एक क्रांतिकारी छात्र संगठन के रूप में, हम इस पुस्तिका को आप सबके साथ साँझा करते हुए उत्सुक है, जो किसान संघर्षों की साम्राज्यवाद-विरोधी विरासत को फिर से दिखाती है। इनमें से कई क्रांतिकारी आंदोलनों ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद का विरोध किया और हमारे स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 15 अगस्त, 1947 को अंग्रेजों से आज़ादी हासिल करने के बाद भी, हमारी सामूहिक नियति अभी भी विदेशी और घरेलू पूंजीपतियों के हाथों में है। लेकिन जैसा कि शहीद-ए-आज़म भगत सिंह ने शहीद होने से पहले अपनी अंतिम याचिका में लिखा था, 'हमें यह घोषित करना चाहिए कि युद्ध की स्थिति मौजूद है

और तब तक मौजूद रहेगी जब तक कि भारतीय मेहनतकश जनता और प्राकृतिक संसाधनों का मुट्ठी भर परजीवी लोगों द्वारा शोषण किया जा रहा है' ।स्वतंत्रता प्राप्त करने का संघर्ष, अपने पूरे अर्थों में, और हमारा अपना भारत बनाने का संघर्ष आजादी के बाद भी जारी है।

यह किसान आन्दोलन उस आंदोलन का एक और उदाहरण है जो उन सपनों को दर्शाता है जो भारत के लोगों ने पहले देखे थे, हमारे जीवन के हर क्षेत्र में पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करने के। क्रांतिकारी किसानों और खेत श्रमिकों ने इस असम्बद्ध संघर्ष में जबरदस्त हौसला दिखाया है, यह घोषणा करते हुए कि जब तक इन जनविरोधी कानूनों को वापस नहीं लिया जाता, तब तक कोई संकल्प संभव नहीं होगा। सत्तारूढ़ शासन के बैरिकेड्स, आंसू गैस के गोले, नकली समाचार और झूठे आपराधिक आरोपों के बावजूद, संघर्षरत किसान दिल्ली पहुंच गए हैं और अपनी सही मांग रख रहे हैं। इस संघर्ष ने हमें एक बार फिर दिखाया है कि जो लोग इस देश, उसके किसानों और श्रमिकों, का निर्माण करते हैं, उनके द्वारा एक जन आंदोलन के बिना नवउदारवादी फासीवाद के खिलाफ युद्ध अधूरा रहता है। इस प्रकार, हम निम्नलिखित पृष्ठों में वर्णित क्रांतिकारी प्रवृत्ति की निरंतरता में वर्तमान किसान आंदोलन को पकड़ते हैं। हमें उम्मीद है कि हमारा प्रयास इस आंदोलन में सकारात्मक योगदान दे सकता है और इसे हमारे साझा सपनों का भारत बनाने की दिशा में सफल बना सकता है।

इंकलाब जिंदाबाद!

कलेक्टिव

नई दिल्ली, जनवरी 2021

सोबरायन का युद्ध (एंग्लो-सिख युद्ध, 1845)

शेर-ए-पंजाब रणजीत सिंह ने 1845 के एंग्लो-सिख युद्ध में ब्रिटिश उपनिवेशवादियों से आर पार की लड़ाई में वर्तमान हिमाचल प्रदेश में एक सेना का नेतृत्व किया। कांगड़ा के पहाड़ी क्षेत्रों, गुलेर, जसवान, दातारपुर, नूरपुर,सुकेत, कुल्लू और लाहौल-स्पीति में रहने वाले जनजातियों ने इस निर्णायक लड़ाई में साम्राज्यवाद के आगे के मार्च को रोकने के लिए बहादुरी से लड़ाई लड़ी।

संथाल और बुंदेलखंड हूल (1855-57)

संथाल हूल, जिसने 30 जून, 1855 को भारतीय स्वतंत्रता के लिए पहले युद्ध की स्थापना की। यह पूर्वी भारत में, वर्तमान ब्रिटिश झारखंड में, ब्रिटिश औपनिवेशिक सत्ता और जमींदारी व्यवस्था दोनों के खिलाफ एक विद्रोह था। 10 नवंबर को मार्शल लॉ घोषित किया गया, जो 3 जनवरी, 1856 तक चला, जब विद्रोह अंग्रेजों के प्रति वफादार सैनिकों द्वारा क्रूरता से कुचल दिया गया था। उस विद्रोह का नेतृत्व शहीद सिद्धो, कान्हू, चंद और भैरव मुर्मू ने किया था।

नील विद्रोह (1859)

बंगाल प्रांत में नील विद्रोह या इंडिगो विद्रोह ईस्ट इंडिया कंपनी के बगान मालिकों के खिलाफ किया गया था। नील की खेती के लिए किसानों को एडवांस लेने और फर्जी कॉन्ट्रैक्ट पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर किया था। आज नवउदारवादी शासन द्वारा अनुबंधित यह कानून कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग मॉडल का ही एक उदाहरण है। बंगाल के नदिया जिले के गोबिंदपुर गाँव में यह विद्रोह शुरू हुआ, जहाँ किसानों ने मालिकों के लठियालों (बाउंसरों) से लड़ने के लिए तैय्यारी की। दीनबंधु मित्र ने अपने नाटक नील दर्पन में इसका विवरण दिया है। 1860 में नियुक्त ब्रिटिश इंडिगो आयोग ने कुछ उत्पीड़नों पे कटौती की, लेकिन ब्रिटिश हितों के लिए अनुबंध खेती(कोट्रैक्ट फार्मिंग) का मुद्दा राष्ट्रीय आंदोलन में एक ज्वलंत मुद्दा बना रहा।

पगड़ी संभल जट्टा आंदोलन (1907)

1879 में, ब्रिटिश सरकार ने वर्तमान पाकिस्तान में चिनाब नदी से लायलपुर तक पानी खींचने के लिए ऊपरी बारी दोआब नहर का निर्माण किया। इसने निर्जन क्षेत्र में बस्तियां स्थापित कीं और किसानों को मुफ्त जमीन देने का वादा किया। कई लोग यहां बसने चले गए। लेकिन, आज के समय के साथ एक उल्लेखनीय संयोग से, ब्रिटिश सरकार ने किसानों के स्वामित्व अधिकारों से इनकार करते हुए तीन कानूनों को पारित किया, जिससे किसान बटाईदारों की भूमिका तक सीमित कर दिये गए। नए कानूनों ने किसानों को घर बनाने या पेड़ काटने से भी रोक दिया और कहा कि अगर वयस्क होने से पहले सबसे बड़े उत्तराधिकारी की मृत्यु हो जाती है, तो जमीन ब्रिटिश सरकार द्वारा जब्त कर ली जाएगी। पगड़ी संभल जट्ट आंदोलन इन तीन ब्रिटिश कानूनों के खिलाफ किसानों का आंदोलन था। भगत सिंह के चाचा सरदार अजीत सिंह ने भी इस आंदोलन का नेतृत्व किया।

चंपारण सत्याग्रह (1917)

बिहार के चंपारण जिले में नील की खेती करने वाले किसान नील खेती की शोषणकारी प्रथाओं के खिलाफ उठे।. गांधीवादी आंदोलन ने ब्रिटिश अनुबंध खेती को चुनौती दी।. स्वतंत्रता के संघर्ष के इतिहास में चंपारण एक जुझारू किसान प्रतिरोध का उदाहरण है।

एका आन्दोलन (1921-22)

एका आंदोलन वर्तमान उत्तर प्रदेश में हरदोई, बहरीन और सीतापुर में सामने आया।. शुरू में यह कांग्रेस और खिलाफत नेताओं द्वारा शुरू किया गया था। बाद में, मदारी पासी ने विद्रोह का नेतृत्व करते हुए सामंती ठेकेदारों द्वारा वसूले जा रहे उच्च किराए के खिलाफ आंदोलन तेज़ किया। इस झुझारू आंदोलन के द्वारा भूमिहीन और कृषि श्रमिकों पर हो रहे जातिवादी उत्पीड़न को भी चुनौती दी गई।. गणेश शंकर विद्यार्थी जैसे जन समर्थक पत्रकारों ने आंदोलन के पक्ष में राष्ट्रीय भावना जुटाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मालाबार विद्रोह (1921)

मालाबार में मपीला किसानों ने दमनकारी ब्रिटिश राज के जेंसिम प्रथा और ब्रिटिश राज के समर्थक ज़मींदारों की शोशंकारी प्रथाओं के खिलाफ सशस्त्र विद्रोह किया। आधिकारिक रिकॉर्ड को नष्ट करना और सरकारी इमारतों को जलाना आंदोलनकारियों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले विद्रोह के कुछ तरीके थे।

गदर पार्टी

चाहिए: भारत में क्रांति लाने के लिए बहादुर सैनिक।
वेतन: मृत्यु।
पुरस्कार: शहादत।
पेंशन: लिबर्टी।
युद्ध का क्षेत्र: भारत।
- *हिंदुस्तान गदर* (यू.एस.ए., 1913) का पहला अंक।

ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ 1913 में सैन फ्रांसिस्को में ग़दर पार्टी शुरू की गई। गदरियों ने साम्राज्यवाद के खिलाफ और स्व-शासन के उद्देश्य से सशस्त्र विद्रोह करने के लिए प्रवासी भारतीय श्रमिकों, किसानों और सैनिकों को एकजुट करने का प्रयास किया।

उत्तरी अमेरिका और यूरोप में कई भारतीय इस समय बसना शुरू कर रहे थे जो अपने साथ भारत में भूमि पर औपनिवेशिक कब्ज़ा और अंग्रेज़ी कृषि नीतियों के खिलाफ संघर्षों के अनुभव साथ लेकर आये थे। इन भारतीयों ने ही ग़दर पार्टी को शुरू किया। उनमें से प्रमुख अजीत सिंह थे, जो यूरोप और बाद में, लैटिन अमेरिका के ब्रिटिश उपनिवेशों में प्रवासी भारतीयों को संगठित करने के लिए म्यांमार की जेल से भाग गए थे। सोहन सिंह बाखना इसके संस्थापक अध्यक्ष और लाला हरदयाल इसके सचिव बने। शहीद कर्तार सिंह सराभा ने अपने प्रतिबंधित अखबार गदर, अथवा विद्रोह, को चलाने में मदद करने के लिए उच्च शिक्षा छोड़ दी। आगे चलकर, भगत सिंह हमेशा अपनी जेब में सराभा की फोटो रखते।

शुरुवात से गदर पार्टी अपने दिशानिर्देश में अंतर्राष्ट्रीयवादी थी। इसी कारण ग़दर पार्टी ने भारत में उपनिवेशवाद विरोधी आन्दोलनों को आयरिश, मिस्र और चीनी मुक्ति संघर्षों के संपर्क में लाया। रूस में सम्पूर्ण सामाजिक परिवर्तन की लहर ने दुनिया में सबसे पहला ऐसा राज्य स्थापन किया जहां मेहनतकशों का राज था। इससे प्रेरित होकर गदरियों के भीतर एक समाजवादी मंथन हुआ, जिस तरह दुनिया भर में कई अन्य मुक्ति संघर्षों के बीच हुआ था। ग़दर पार्टी ने पूंजीवादी व्यवस्था में उपनिवेशवाद की जड़ों की मौजूदगी को रेखांकित किया और दिखाया कि एक बेहतर दुनिया संभव है। उस समय सोवियत रूस से भी गदरियों और अन्य उपनिवेशवाद-विरोधी क्रांतिकारियों को भौतिक और वैचारिक रूप से सहायता मिली।

भागत सिंह और एच.एस.आर.ए

भारत में एक संगठित श्रमिक आन्दोलन को तैयार करने में कम्युनिस्ट पार्टी के स्थापन, कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी, मज़दूर – किसान पार्टी इत्यादि की स्थापना ने एक अहम् भूमिका निभाई। इनमें से मुख्य भूमिका हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन में भगत सिंह और उनके साथियों की थी, जिन्होंने गदर की विरासत को आगे बढ़ाया। समाजवादी सोच के प्रचार और सशस्त्र संग्राम के लिए संशाधन जुटाने के लिए उन्होंने काकोरी रेल से ब्रिटिश राजकोष की डकैती करी। मेहनतकशों की आवाज़ को 'बेहेरों को सुनाने' के लिए उन्होंने संसद में बम्ब भी मारा। एच.एस.आर.ए. शहीदों के वीरतापूर्ण कार्य और भारत के मेहनतकश जनता के स्वतंत्रता संग्राम में भागीदारी साथ-साथ बढ़ी। 1930 के दशक से, मजदूरों-किसानों-सैनिकों ने ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता के राजनीतिक महत्व को महसूस करना शुरू कर दिया और पूंजीवाद-साम्राज्यवाद से हमारे जीवन और भविष्य को छुड़ाने के लिए सक्रिय जन आंदोलनों की शुरुआत की।

महान तेभागा आंदोलन (1946)

दो तिहाई फसल के लिए बंगाल के बटाईदारो का ऐतिहासिक संघर्ष ब्रिटिश शासन के खिलाफ 1946 में लड़ा गया। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान व्यापक अकाल के वक्त किसानों ने हर सम्भव तरीके से ज़मींदारी - औपनिवेशिक सांठगांठ को चुनौती दी। इस आन्दोलन अपने प्रतिभागियों पर एक स्थायी छाप छोड़ी, विशेष रूप से महिलाओं पर, और उस समय भारत में विभाजन के कारण फैली सांप्रदायिक घृणा के बजाय वर्ग संघर्ष को मजबूत किया।

तेलंगाना सशस्त्र संघर्ष (1946-51)

तेलंगाना क्षेत्र में भूमिहीन और छोटे किसानों ने निज़ाम, उच्च जाति के जमींदारों और ब्रिटिश औपनिवेशिक भूमि-कराधान प्रणालियों के सामंती शासन के खिलाफ हथियार उठाए।.इस संघर्ष में अधिकांश भागीदारी दलितों और आदिवासियों की थी जिन्होंने खुद को गिरोहों में संगठित किया। उन्होंने निज़ाम के क्रूर रजाकरों के चंगुल से गांवों को मुक्त करके किसानों के बीच भूमि वितरित की।. निज़ाम के शासन को खत्म करने और संवैधानिक लोकतंत्र की स्थापना के लिए भेजी गई भारतीय सेना ने जल्द ही भूमि पुनर्वितरण कार्यक्रम को हराने के लिए संघर्षरत किसानों को दबाने के लिए पूरा जोर लगाया। 'टिलर की भूमि' पूंजीवादी-जमींदार शासक वर्ग के खिलाफ संघर्ष में एक केंद्रीय नारे के रूप में उभरा, चाहे वह शासन राजशाही हो या लोकतांत्रिक।

नक्सलबाड़ी विद्रोह (1967)

आजादी के बीस साल बाद, 1967 में नक्सलबाड़ी विद्रोह के दौरान, किसानों ने पश्चिम बंगाल के एक गाँव में भूमि पुनर्विभाजन के लिए ज़मींदारी भूमि पर कब्जा कर लिया और सरकारी उग्रवादी दमन का सामना किया। इस चिंगारी विशेष रूप से बिहार, पंजाब और तेलंगाना में फैली और आने वाले सालों में देश भर में विद्रोह को प्रेरित किया, जिसमें कई छात्र-नौजवान किसान संघर्ष के साथ खड़े हुए। क्रांतिकारी स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े कई भारतीयों ने पाया कि सत्ता का केवल हस्तांतरण 15 अगस्त, 1947 को हुआ था। स्वतंत्रता आन्दोलन में शामिल हुए भारतियों के दो प्रमुख मांगों - मौलिक भूमि पुनर्वितरण और समाज के लोकतंत्रीकरण - को केवल आधे-अधूरे रूप से लागू किया गया था। सिर्फ एक किसान संघर्ष ही नहीं, नक्सलबाड़ी ने इस सच्चाई को चिन्हित किआ कि भारतीय मेहनतकश लोगों के बहुमत के लिए स्वतंत्रता का क्या मतलब है।

भारतीय कृषि शेत्र 1960 के दशक से, परिवर्तन की एक श्रंखला से गुज़र रहा है। आज अमरीकी साम्राज्यवाद के विपरीत किसी विकल्प की अभाव, हरित क्रांति के दौर से भारतीय कृषि में विदेशी पूँजी का हस्तक्षेप और दुनियाभर में फ़ासीवादी - सत्तावादी सरकारों के प्रहार से मेहनतकश आवाम के सामने नये प्रश्न खड़े हुए है। पिछले दशक से इन बदलते परिस्थितियों के खिलाफ़ भी कई महत्वपूर्ण संघर्ष हुए है।

एंटी पोस्को संघर्ष (2005-10)

एंटी - पोस्को आंदोलन शुरू हुआ जब ओडिशा सरकार ने कोरिया के पोहांग स्टील (POSCO) कंपनी के साथ, जगतसिंहपुर जिले में एक बड़ी औद्योगिक टाउनशिप स्थापित करने के प्रस्ताव पर, समझौता किया। आदिवासी आबादी द्वारा स्वदेशी वानिकी और सुपारी की खेती को इस कदम से खतरा था। झुझारू विरोध और बड़े पैमाने पर सार्वजनिक प्रदर्शनों के कारण सरकार जो जमीन बहुराष्ट्रीय निगम को लिखित दे चुकी थी, उसे वापस करने के लिए मजबूर हुयी।

कोका कोला पानी संघर्ष (2002 - 04)

प्लाचीमाडा कोका कोला संघर्ष केरल के पालक्का स्थित प्लाचीमाडा गांव में सॉफ्ट ड्रिंक बनाने वाली कम्पनी कोका कोला के ख़िलाफ़ हुआ था। फैक्ट्री खुलने के बाद गांव के लोगो का जलाशय सूखने लगा और बचा हुआ पानी जहरीला होने लगा। फैक्टरी से निकलने वाली गंदगी को आस पास के इलाकों में फ़र्टिलाइज़र की तरह उपयोग में दिया जाने लगा।

सरकार द्वारा जल स्रोतों को कोका कोला जैसी बड़ी कंपनी को देने का काम दुनिया भर में हुआ है। 22 अप्रैल 2002 को गांव के आदिवासियों ने फैक्ट्री की गेट पर प्रदर्शन शुरू किया। 2004 में इस बहुराष्ट्रीय कंपनी को लोगो से हारकर प्लाचीमाडा गांव की फैक्ट्री बंद करनी पड़ी।

नियमगिरि आंदोलन (मध्य 2000s - 2014)

भारत सरकार द्वारा वेदांता, इंग्लैंड में स्थित एक कम्पनी को नियमगिरि इलाके से बॉक्साइट की खदानी करने की छूट दिए जाने के खिलाफ इस इलाके में रहने वाले डोंगरिया कोंध आदिवासियों ने लंबा आंदोलन चलाया। बाद में जाँच पड़ताल के दौरान पता चला कि पर्यावरण संबंधित स्टडी किए बिना ही इस कम्पनी को बॉक्साइट निकालने की इजाज़त मिल गई थी। नियमगिरि के लोगो द्वारा जमीन, जनजीवन और पर्यावरण को बचाने का ये संघर्ष अपने आप मे एक मिसाल है।

सिंगुर-नन्दीग्राम-लालगढ़ आंदोलन (2006 - 09)

पिछले दशक पश्चिम बंगाल में जबरन खेती और जंगल की जमीन से बेदखल किए जाने के खिलाफ कई आंदोलन हुए है। 2006 में पश्चिम बंगाल सरकार ने टाटा मोटर्स कम्पनी को सिंगुर जिले में ऑटोमोबाइल फैक्ट्री बनाने के लिए जगह आवंटित की। इसमे खेती की उपजाऊ जमीन गांव वालों से छीनकर कम्पनी को देने का प्रस्ताव था। कई तरह के पुलिसिया दमन के बावजूद, सिंगुर आंदोलन दशको बाद अपने आप मे देश का पहला ऐसा आंदोलन बना जिसमे किसी निजी कम्पनी के द्वारा जमीन हड़पने के खिलाफ राज्य भर से किसान सामने आए।

सिंगुर आंदोलन में सफल होने के बाद, नन्दीग्राम में भी किसानों की जमीन इंडोनेशिया की केमिकल कम्पनी सालेम को दिए जाने ले खिलाफ ऐसा ही व्यापक आंदोलन शुरू हुआ। इसके बाद लालगढ़ भी ऐसा ही एक आंदोलन था जिसमे पर्यावरण और लोगो के हितों को नजरअंदाज करके विदेशी कम्पनियों को जमीन दिए जाने के ख़िलाफ़ बड़ा आंदोलन हुआ। लालगढ़ आंदोलन की वजह से जिंदल कम्पनी को अपने कदम पीछे लेने पड़े। सिंगुर नन्दीग्राम और लालगढ़ आंदोलन हमारे समय के सबसे महत्वपूर्ण आंदोलनों में हैं।

ऊना आज़ादी कूंच (2016)

जुलाई 2016 में, गुजरात के ऊना में आरएसएस समर्थित किसी गाय विगलान्टे समूह ने एक दलित परिवार पर हमला किया क्योंकि वे एक मरी हुई गाय की खाल उतार रहे थे। दलित समुदाय परंपरागत रूप से सफाई के काम से जुदा रहा है। इस हिंसा के विरोध में उन्होंने सफाई कार्य का बहिष्कार करने का निर्णय लिया, और साथ में सीवरों और नालियों की सफाई करने से भी इंकार किया।उन्होंने राज्य सरकार से सार्वजनिक भूमि पर नियंत्रण की मांग करके अपनी आजीविका अर्जित करने की मांग की।राज्य सरकार ने तीन दशक पहले दलितों को 160,000 एकड़ से अधिक भूमि औपचारिक रूप से आवंटित की थी, लेकिन वास्तव में दलित जातियों को भूमि कभी नहीं सौंपी गई थी। ऊना भूमि संघर्ष ने दलित जातियों के लिए भूमि और गरिमा के संघर्ष के रचनात्मक संयोजन को नया रूप दिया। ऊना संघर्ष गुजरात में हुआ जिस राज्य को नव उदारवाद- फासीवादी राज्य का सबसे महत्वपूर्ण मॉडल के तरह देख सकते हैं।

किसान लॉन्ग मार्च (2018)

महाराष्ट्र में लाखों किसानों ने मुंबई, भारत की वित्त राजधानी, तक मार्च निकाला। उनकी मांग थी कृषि संकट पर चर्चा के लिए संसद का विशेष सत्र । इस मार्च ने किसान को राजनीतिक रूप से एक महत्वपूर्ण श्रेणी के बतौर सार्वजनिक कल्पना में वापस ला दिया। एमएसपी और ऋण माफी जैसे मुद्दे किसानों की तत्काल मांग थी। लेकिन उनके द्वारा पूंजीवादी कृषि की व्यवहार्यता के बारे में कई प्रश्न चिन्हित हुए, जैसे उच्च इनपुट लागत, पारिस्थितिक रूप से विनाशकारी रासायनिक इनपुट, ऋणग्रस्तता और बाजार संचालित फसल उगाई तथा कटाई, इत्यादि।

नवउदारवाद और फासीवाद के विरुद्ध संघर्ष में आज देशभर में चल रहा किसान आंदोलन तत्कालीन दुनिया में एक ऐतिहासिक पहल है।
अपने इतिहास से सीखकर, उससे प्रेरणा लेते हुए आज अमर शहीदों की राह पर चलने की ज़रूरत है--गैरबराबरी और अन्याय पर आधारित इस व्यवस्था के विकल्प में एक बेहतर दुनिया संभव है,
यह ऐलान करने की ज़रूरत है !

कलेक्टिव के तरफ़ से, हम देश के छात्र-नौजवानों को
मेहनतकश आवाम के संघर्षों में हमारे साथ
जुड़ने के लिए आमंत्रित करते है।

हमसे संपर्क करे:
+91-88792-15570 | +91-98111-07835
collectivedelhi@gmail.com
शहीद यादगार टेंट
पिलर 777, टिकरी बॉर्डर, नई दिल्ली

Towards a free university,
Towards a free society!

COLLECTIVE
COLLECTIVEdelhi